भारत में राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवस

***

कैंसर की रोकथाम, उपचार और नवाचार के लिए समुचित पहल का आह्वान

***

हमारा प्रयास यह है कि सभी नागरिकों को केंद्र सरकार की योजनाओं का देश के किसी भी हिस्से में लाभ मिल सके, उसके लिए कोई प्रतिबंध नहीं होना चाहिए। यह एक राष्ट्र, एक स्वास्थ्य की भावना है" - प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

***

07 नवम्बर, 2024
नई दिल्ली

भारत प्रत्येक वर्ष 7 नवंबर को राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवस मनाता है और इस पहल का उद्देश्य देश में कैंसर के बढ़ते मामलों के बारे में जागरूकता बढ़ाना और इसका शीघ्र पता लगाकर, रोकथाम और उपचार की दिशा में समुचित कार्रवाई के लिए प्रेरित करना है। भारत राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवस को आधिकारिक तौर पर मान्यता देने वाला विश्व का पहला देश है। यह तारीख न केवल रेडियोधर्मिता की खोज करने वाली नोबेल पुरस्कार विजेता मैडम मैरी क्यूरी के जन्म का सम्मान करने के लिए चुनी गई थी, बल्कि इसका उद्देश्य सार्वजनिक स्वास्थ्य प्राथमिकता के रूप में कैंसर से निपटने के लिए भारत की प्रतिबद्धता को भी प्रतिबिंबित करना है।

भारत की आबादी 1.4 अरब से अधिक है और यहां कैंसर के मामलों में तेजी से बढ़ोतरी हो रही है, जिसका मुख्य कारण जीवनशैली में बदलाव, तम्बाकू का इस्तेमाल, आहार संबंधी खराब आदतें और अपर्याप्त शारीरिक गतिविधि है। अनुमानों के मुताबिक, भारत में प्रतिवर्ष कैंसर के लगभग 800,000 नए मामले सामने आने की आशंका है, जिनमें पुरुषों में होने वाले सभी प्रकार के कैंसर में तम्बाकू से जुड़े 35-50 प्रतिशत और महिलाओं में 17 प्रतिशत कैंसर मामले हैं। हालांकि, विभिन्न प्रकार के कैंसर की रोकथाम संभव है और व्यापक जागरूकता तथा समय पर उचित प्रयास से भारत कैंसर के बोझ को काफी हद तक कम करने में सफल हो रहा है।

भारत में कैंसर देखभाल के क्षेत्र में बढ़ती प्रगति

कैंसर आज भारत के सामने सबसे गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौतियों में से एक है। **राष्ट्रीय कैंसर रजिस्ट्री कार्यक्रम** के आंकड़ों के अनुसार, भारत में प्रतिवर्ष कैंसर के अनुमानित 800,000 नए मामले सामने आने की आशंका है। इनमें तम्बाकू से संबंधित मुखगुहा (ओरल कैविटी), फेफड़े, और सिर और गर्दन के कैंसर-विशेष रूप से देखे जा रहे हैं और कुल कैंसर मामलों में यह एक बड़ा हिस्सा है। ये कैंसर काफी हद तक रोके जा सकते हैं, जो इनके समय रहते पता लगने, जीवन शैली में बदलाव और तंबाकू उत्पादों के उपयोग पर पूर्ण रोकथाम जैसे कार्यक्रम को रेखांकित करते हैं।

कैंसर के मामलों में वृद्धि का एक सबसे बड़ा कारण यह भी है कि मरीजों को अपनी इस बीमारी का पता उस समय चलता है, जब कैंसर एडवांस स्टेज में होता है और उसके उपचार में कोई भी प्रणाली पूरी तरह कारगर नहीं रह पाती। भारत की विविध आबादी और स्वास्थ्य देखभाल संबंधी असमानताओं की वजह से कैंसर के शीघ्र निदान और उपचार में सभी मरीजों की स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच नहीं है और यह भी देश के सामने एक बड़ी चुनौती है। स्वास्थ्य सुविधाओं संबंधी बुनियादी ढांचे में सुधार, जनजागरूकता अभियानों और कैंसर देखभाल सुविधाओं में बढ़ोतरी से इन खामियों को पूरा करने के प्रयास जारी हैं और यह इस बीमारी पर काबू पाने के लिए आवश्यक हैं।

❖ **तंबाकू, आहार और जीवनशैली में परिवर्तन से जुड़े जोखिम कारकों पर विचार करना**

भारत में कैंसर मामलों में हो रही बढ़ोतरी पर अगर ध्यान दिया जाए तो इसमें जीवन शैली में बदलाव से जुड़े कई जोखिम कारक अहम हैं। तम्बाकू का सेवन, चाहे धूम्रपान हो या चबाना हो, भारत में कैंसर का सबसे बड़ा कारक है। यह पुरुषों में कैंसर के अनुमानित 40-50 प्रतिशत और महिलाओं में 20 प्रतिशत मामलों के लिए जिम्मेदार है। मुंह के कैंसर के बढ़ते मामले विशेष रूप

से एक प्रमुख चिंता का विषय हैं, क्योंकि देश के अनेक क्षेत्रों में तंबाकू चबाना सबसे अधिक प्रचलन में है। सरकार ने इन मुद्दों के समाधान के लिए विभिन्न उपाय किए हैं, जैसे:

- **तम्बाकू नियंत्रण:** तम्बाकू का उपयोग कैंसर के लिए एक प्रमुख जोखिम कारक है, इसलिए विभिन्न सार्वजनिक स्वास्थ्य अभियानों के माध्यम से तम्बाकू सेवन को हतोत्साहित करने वाले कार्यक्रमों को लागू किया गया है।
- **व्यापक प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल:** आयुष्मान भारत स्वास्थ्य और कल्याण केंद्र (एबी-एचडब्ल्यूसी) के माध्यम से कैंसर के निवारक पहलू पर मजबूती से ध्यान दिया गया है, जो लोगों के स्वास्थ्य को ठीक रखने वाली गतिविधियों और सामुदायिक स्तर पर स्वास्थ्य संचार को बढ़ावा देता है।
- **पोषण संवर्धन:** भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) कैंसर के खतरे को कम करने के लिए स्वस्थ खान-पान की आदतों को बढ़ावा देता है।

❖ राष्ट्रीय कैंसर नियंत्रण कार्यक्रम

राष्ट्रीय कैंसर नियंत्रण कार्यक्रम (एनसीसीपी) 1975 में शुरू किया गया था और बाद में इसे कैंसर, मधुमेह, हृदय रोगों, मस्तिष्क आघात (स्ट्रोक) की रोकथाम और नियंत्रण के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम (एनपीसीडीसीएस), में एकीकृत कर दिया गया, जो 2010 से चालू है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) के तहत, एनपीसीडीसीएस कैंसर की रोकथाम के बारे में जागरूकता पैदा करने में राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों को सहयोग प्रदान करता है। जमीनी स्तर पर जन जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए सूचना, शिक्षा और संचार (आईईसी) गतिविधियों में वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।

इस पहल के हिस्से के रूप में, जिला स्तर पर 616 गैर-संचारी रोग (एनसीडी) क्लीनिक स्थापित किए गए हैं और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों (सीएचसी) के स्तर पर 3,827 ऐसे क्लीनिकों की स्थापना की गई है। इसके अलावा, विशेष देखभाल प्रदान करने के लिए कीमोथेरेपी के लिए 214 डे केयर सेंटर स्थापित किए गए हैं।

इस कार्यक्रम में सामान्य तौर पर गैर संचारी रोगों के लिए जनसंख्या आधारित स्क्रीनिंग शामिल है, जिसमें 30 वर्ष और उससे अधिक आयु के व्यक्तियों की तीन प्रमुख कैंसर- स्तन, मुंह का कैंसर और गर्भाशय ग्रीवा कैंसर के लिए स्क्रीनिंग की जा रही है।

❖ कैंसर देखभाल में सुधार के लिए हाल ही में किये गये बजटीय उपाय

वित्त वर्ष 2024-25 के केंद्रीय बजट में भारत में कैंसर देखभाल के क्षेत्र में धनराशि में बढ़ोतरी की गई है और राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) के लिए लगभग 4,000 करोड़ रुपये की अनुमानित वृद्धि की गई है। यह बढ़ोतरी प्राथमिक और माध्यमिक स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के लिए की गई है, जो कैंसर की देखभाल और शीघ्र पता लगाने की दिशा में महत्वपूर्ण हैं। सरकार डिजिटल पब्लिक बुनियादी ढांचा (डीपीआई) को बढ़ाने पर भी ध्यान केंद्रित कर रही है, जो कैंसर उपचार और प्रबंधन सहित स्वास्थ्य देखभाल में नवाचार और उत्पादकता को बढ़ाता है।

इसके अलावा, कैंसर के उपचार तक पहुंच में सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण महोदया ने कैंसर की तीन मुख्य दवाओं- ट्रैस्टुज़ुमैब डेरक्सटेकन, ओसिमर्टिनिब, और ड्यूरवालुमैब- पर सीमा शुल्क में छूट दिये जाने की घोषणा की है। इन दवाओं का उपयोग स्तन, फेफड़े और पित्त पथ के कैंसर का इलाज करने में किया जाता है और इन पर दी गई छूट से मरीजों के लिए इन दवाओं का उपयोग काफी आसान हो गया है। इस पहल का उद्देश्य कैंसर रोगियों के उपचार पर आने वाले वित्तीय बोझ को कम करना और देश की आबादी के लिए अत्याधुनिक उपचार सुविधाओं को अधिक सुलभ बनाना है।

❖ कैंसर अनुसंधान और उपचार में प्रगति

कैंसर से बचने में संतुलित जीवन शैली बहुत महत्वपूर्ण है लेकिन इस बीमारी से निपटने में हो रही प्रगति का अपना महत्व है। कैंसर के उपचार में नई तकनीकें उभरकर सामने आ रही हैं, जैसे चुंबकीय हाइपरथर्मिया-आधारित थेरेपी, जो चुंबकीय नैनो कणों का इस्तेमाल कर न्यूनतम दुष्प्रभाव के साथ ट्यूमर कोशिकाओं को लक्षित करने और नष्ट करने के लिए मददगार है। यह उपचार पद्धति पारंपरिक कीमोथेरेपी की आवश्यकता को कम कर कैंसर के उपचार में क्रांति ला

सकती है, क्योंकि कीमोथेरेपी के काफी गंभीर दुष्प्रभाव उभरकर सामने आते हैं। भारतीय वैज्ञानिकों ने जो अनुसंधान किये हैं, वे नैनोथेरेपी और अन्य नवाचारी उपचार पद्धतियों के विकास में योगदान दे रहे हैं, जिससे कैंसर का न्यूनतम दुष्प्रभाव के साथ अधिक प्रभावी ढंग से इलाज करना संभव हो गया है।

कैंसर अनुसंधान और उपचार के प्रति भारत की प्रतिबद्धता इसकी क्वाड कैंसर मूनशॉट में भागीदारी में स्पष्ट है, यह कैंसर की समाप्ति की दिशा में अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, भारत और जापान के बीच एक संयुक्त पहल है। भारत अपने राष्ट्रीय गैर-संचारी रोग पोर्टल के माध्यम से, डिजिटल स्वास्थ्य में अपनी विशेषज्ञता साझा कर रहा है, जो काफी लंबी अवधि के कैंसर आंकड़ों को ट्रैक कर भारत-प्रशांत क्षेत्र में कैंसर की रोकथाम और नियंत्रण प्रयासों को सहयोग देता है।

❖ कैंसर का पता लगाने में जांच और रोकथाम क्लीनिकों की भूमिका

भारत की कैंसर नियंत्रण रणनीति का एक प्रमुख घटक जिला अस्पतालों और क्षेत्रीय केंद्रों में कैंसर जांच और रोकथाम क्लीनिकों की स्थापना करना है। ये क्लिनिक शीघ्र निदान सेवाएं और बुनियादी उपचार प्रदान करते हैं, जिससे प्रारंभिक चरण में कैंसर की पहचान करने में मदद मिलती है। केरल इस पहल में अग्रणी रहा है, जिसने जिला अस्पतालों में एक ऐसे मॉडल को सफलतापूर्वक लागू किया है जहां कोशिका विज्ञान और प्रशामक उपचार देखभाल सहित कैंसर संबंधी अन्य सेवाओं की एक श्रृंखला प्रदान की जाती है। इस पहल का लक्ष्य कैंसर देखभाल को अधिक सुलभ और किफायती बनाना है, खासकर उन ग्रामीण क्षेत्रों में जहां विशिष्ट कैंसर केन्द्रों तक लोगों की पहुंच सीमित है।

❖ प्रशामक (पैलीएटिव) देखभाल: अंतिम चरण के कैंसर से निपटना

भारत में 75 प्रतिशत से अधिक कैंसर रोगियों के अंतिम चरण (एडवांस स्टेज) में होने के कारण प्रशामक देखभाल महत्वपूर्ण है। प्रशामक देखभाल ऐसे मरीजों और उनके परिवारों को भावनात्मक सहारा उपलब्ध कराने के साथ-साथ दर्द प्रबंधन और लक्षण आधारित राहत पर केंद्रित है। भारत में दर्द से राहत के लिए ओरल मॉर्फिन की उपलब्धता कैंसर जनित दर्द के प्रबंधन का एक प्रमुख घटक है और सरकार ने देश में उपचार केंद्रों पर इसकी उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए नियमों को सरल बनाने के प्रयास किए हैं।

❖ अंतर्राष्ट्रीय सहयोग: कैंसर के खिलाफ एक वैश्विक लड़ाई

कैंसर से निपटने के भारत के प्रयास राष्ट्रीय पहल तक सीमित नहीं हैं। भारत की कैंसर नियंत्रण रणनीति, तंबाकू नियंत्रण, प्रशामक देखभाल और मानव संसाधन विकास को बढ़ावा देने में विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) एक प्रमुख भागीदार रहा है। इसके अतिरिक्त, क्वाड कैंसर मूनशॉट जैसे अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम में कैंसर के खिलाफ भारत की भागीदारी वैश्विक लड़ाई में इसकी भूमिका को और मजबूत करती है।

भारत इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में पड़ोसी देशों को कैंसर देखभाल और रोकथाम सहायता प्रदान करने के लिए भी कदम उठा रहा है। भारत इस क्षेत्र में विशेषज्ञता साझा कर, स्क्रीनिंग उपकरण प्रदान करने, टीके और उपचारों में सहयोग कर रहा है। सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम और उपचार, जो इस क्षेत्र में एक बड़ा स्वास्थ्य संकट बना हुआ है, से निपटने में वैश्विक कैंसर नियंत्रण प्रयासों में भारत अहम योगदान दे रहा है।

भविष्य के लिए भारत की व्यापक कैंसर नियंत्रण रणनीति

भारत में जिस प्रकार कैंसर के मामलों में बढ़ोतरी हो रही है, उसे देखते हुए भारत को सार्वजनिक शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा बुनियादी ढांचे और अनुसंधान में अपने प्रयासों का विस्तार जारी रखना चाहिए। इसके लिए निरंतर निवेश, सरकारी और निजी क्षेत्रों के बीच सहयोग, देश भर में कैंसर देखभाल क्षेत्र में असमानताओं को कम करने की प्रतिबद्धता की आवश्यकता होगी। सरकार का ध्यान प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल, स्क्रीनिंग कार्यक्रम, तंबाकू नियंत्रण आदि पर है और किफायती दरों पर बेहतर इलाज सही दिशा में एक कदम है। सार्वजनिक स्वास्थ्य से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दे के रूप में कैंसर को प्राथमिकता देकर इसे प्रभावी ढंग से रोकने, पता लगाने और इलाज करने के लिए रणनीतियों को लागू कर, भारत इसके प्रसार को काफी हद तक कम कर सकता है।

राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवस देश में इस क्षेत्र में अब तक हुई प्रगति और कैंसर से लड़ाई में भविष्य की रणनीति का परिचायक है। हम एक साथ मिलकर एक ऐसे भविष्य का निर्माण कर सकते हैं जहां कैंसर से मरने वालों की संख्या न्यूनतम हो सकेगी और विशेष देखभाल तथा सहायता तक कैंसर मरीजों की पहुंच सुनिश्चित होगी।

सन्दर्भ:

https://pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=2051680

https://pib.gov.in/PressReleseDetail.aspx?PRID=2057459&reg=3&lang=1

https://pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=2036143

https://nhm.gov.in/index1.php?lang=1&level=2&sublinkid=1048&lid=604

https://archive.pib.gov.in/archive/releases98/lyr2002/rnov2002/07112002/r0711200210.html#

:~:text=India%20is%20the%20first%20country,for%20the%20discovery%20of%20radioactivity.

https://mohfw.gov.in/sites/default/files/1493693747note_0.pdf

https://mohfw.gov.in/sites/default/files/Cancer%20Prevention%20And%20Control%20In%20
India.pdf

https://static.pib.gov.in/WriteReadData/specificdocs/documents/2023/feb/doc202323157201.pdf

***